कामना

ले सृजन की तूलिका, मैं गीत तेरे गा सकू,
वह प्रेम दे दो मा‘‘ मुझे, जो योग में मैं जा सकू‘‘ ।
ये लतायें हैं जो लिपटीं,
जानता हू‘‘, कौन हैं ।
खिल सकेगा फूल जो,
फल जो सकेगा, फल तुम्हारा ।

सोख कर रसधार उसकी,
खीचकर सारा सहार ।
हैं खडी वह व्यंग्य करती,
खिल खिलाती मौन है ।

अब निहारु प्रभामण्डल, एक कोई किरण भेजो,
आ‘‘सूओं को गू‘‘थकर, तेरे गले पहना सकू‘‘ ।
ले सृजन...........

मैं हू‘‘ कैसा बा‘‘वरा, जो
गीत गाने को चला ।
साज विछ जाये बहुत है,
गा सका कोई भला ?

छेड तुम ही तार को, अब,
फू‘‘क स्वर, इस बा‘‘सुरी में ।

DO NOT COPY

हैं सुबह से पूर्व ही
सूरज ढला ।

ले पकड यह उ‘‘गली, अब है न कोई भी सहारा,

जो बना वीणा तुम्हारी , गोद में मैं आ सकू‘‘ ।

ले सृजन ....

थिरकते पावों में अब,

पायल कहा‘‘ ।

शोभते हैं घु‘‘घरु,

कह प्यार के ।

हैं, चिताए‘‘ जल चुकीं

मैं चुन रहा ।

अस्थियों का भस्म हीं ।

अंगार से

अब न गजरा बिन्दियां और वालियों की चाह है,

खोल पलकों को जहा‘‘ पर, मैं ठहर सुस्ता सक‘‘ू ।

जो हलाहल पी चुका हू‘‘,

क्या वही काफी नहीं ?

एक प्याले में ही कोई,

हो गये क्या-क्या नहीं ?

अब तो आओ प्राण में

DO NOT COPY

कि सा‘‘स क्या लू‘‘ ।

पी सकू‘‘गा क्या सभी

जन्मों के हेतु आज ही ?

मैं न मीरा वन सकू‘‘गा, और ना सुकरात ही,

कामना सरयू किनारे, तीर कोई खा सकू‘‘ ।

ले सृजन ....

DO NOT COPY

भक्ति

वदलों का पाल

खोलकर

इन हवाओं के साथ

हे परम पिता !

सागर तल पर

मैंने अपनी ना‘‘व छोड दी है !

अपने इशारों पर

तू

इसे जहा‘‘ भी ले चल,

प्रभो !

अहंकार का नागयुद्ध मैंने देखा है,

उससे

मैं दंशित न होऊ‘‘,

DO NOT COPY

पर तेरा स्वाभिमान

मेरे सर पर चढकर बोले

प्रभु !

जब तक तेरी इच्छा हो

इस सागर को अपनी आ“खों मैं समेट

सकू“ ,

ढलती शाम का कुन्दन

जब चिता की अग्नि से

मेल खाने लगे,

जब

नीरव रात्री का गहन अंधकार

मुझे अपनी गोद में लेने लगे

तब,

हे “प्रभो ।

इन आ“खों में सिमटे सागर से

तू अपना पा“व पखारने देना !

जाह्न्वी की रेत कीं पूनरावृति में

रह गयी कमी को

पूरा करने देना !

DO NOT COPY

बिदाई

तेरे आ“गन से

जब मैं चला जाउ“ ,

लौट कर जब मैं तुझे

प्रणाम करने को भी तरस जाउ“,

सुबह-शाम की पगडंडिया“

जब मेरे पैरों के निशान से

खाली पडी रहे !

ठिठुरती रातों में,

तेरी गोद में

जब मैं पा“व न पटक सकू“,

बसन्त की अमराई से

जब पतझर न जा सके,

सावन की झडी में

तेरे टूटे हुए मन्दिर में

तेरे साथ भींगने के लिऐ

जब मैं न आ सकू“,

दीवाली और दशहरे की रंगीनियों में

जब मैं

कहीं भी न मिल सकू“,

DO NOT COPY

होली के ढेर के चारों ओर

लोग जब

डफलियों पर थाप देते हों,

मा‘‘ !

तब तू मुझे

उनके बीच की लपटों में देख लेना,

तू विसूरना मत मा‘‘ !

कितनी सुबह कितनी शाम

चली जायेगी आकर !

मा‘‘ !

जब मैं शाम की धधकती ज्वाला को

पी रहा हू‘‘गा

तू विसूरना मत !

DO NOT COPY

लोकोक्तिया“

सदियों पहले
जब मैं पगडंडियों पर
जा रहा था,
रास्तों के कीचड ने
मेरे पैरों के निशान उतार लिए !
एक बुर्जुआ से व्यक्ति का
प्राणान्तक चोट खाकर
किसी नाग की आ“खों ने
उसका अक्स उतार लिया !
विचलित होकर,
मैंने तेरी ओर आ“खें उठाई !
देखा मैंने
तेरे गले में
नाग-माला कहीं नहीं था,
तेरे पास ही
बादलों पर एक घडियाल बैठा
सब कुछ खा रहा था !
कितने तोते, मैंने, ह“स, मयूर
सब उसके पेट में चले जा रहे थे,

DO NOT COPY

फिर उसने
एक आदमी को खा लिया,
और
घडियाल से नरभक्षी सिंह बन गया !
मैंने देखा
उस घडियाली सिंह का अक्स,
किसी ने नहीं उतारा।
मेरे विचलित होने की सीमा को
कौन नाप सकता है ?
पर,
थोडी ही देर के वाद
वादलों की ओट में जाकर,
तू ने अपना
हाथ खिंच लिया !
फिर न वह सिंह रहा न घडियाल,
रात्रि का गहन अंधकार
सवको समेट चुका था।
सुवह मैंने देखा,
लोगों को तू
कीचड के निशान एवं

DO NOT COPY

उस बुर्जुवा का अक्स बतला रहा था !

तडपती हुई नागिन,

आज भी

उस बुर्जुवा को खोज रही है !

कीचड के निशान

चलते फिरते राहगीरों,

खेतों और खलिहानों के

बडेबुढे, नवजवानों में

चर्चा का विषय बना है

अमराई में कोयल उसे

गाती है

पनघट के घडे

उसी निशान के

गीत गाते हुए खनकते हैं !

DO NOT COPY

खोज

ऐ मेरे दोस्त,

बादलों के पार से

झा‘‘कते हुए,

मैंने देखा है तूझे !

लोग जब,

रोग, शोक और भोक को

हटाने में लगे हुए थे,

बादलों के पृष्ठ

तेरे खून की लाली से

भर गये थे !

देखा है मैंने दोस्त,

आसमान की अदालत में,

सुवह और शाम के सूरज को,

तेरी गवाहिया‘‘ देते हुए !

दोस्त !

लोगों के पेट जब,

उनकी अंतडिया‘‘ तोडकर

वाहर निकल रहे थे

तेरी ठठ्रियों के मान-चित्र पर,

DO NOT COPY

अंगुलिया“ रखकर

मैंने,

चर्चिल और रुजवेल्ट का भूगोल पढा है ।

तब पता नहीं,

क्यों मेरे दोस्त,

त्रिशुल और स्वस्तिक के निशान,

मुझे वेहद अच्छे लगे थे !

गौतम का वह चक्र,

मुझे इसलिए अच्छा लगा था,

कि तब तीन रंगों के बीच

फहराता था !

बादलों के पार से तू

ऐ मेरे दोस्त !

वता,

तूझे कौन सा निशान

अच्छा लगता है

मैं जानता हू“,

तू यहीं कहेगा

“हे परमेश्वर, तू इनको क्षमा कर देना

क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या

DO NOT COPY

कर रहे हैं ।”

ऐ दोस्त !

अगर तू यही कहेगा,

तो हिटलर और मुसोलनी के इतिहास को

मैं नये सिरे से खोजू‘‘गा ।

प्यार का मंजिल

लाया हू‘‘ तेरे द्वार से, पंखुडिया‘‘ गुलाब की

कहते हैं लोग वाग इसे, पर नशे शराब के ।

क्या गजब हुआ कि लोग, बा‘‘धने चले मुझे

मैं मुठ्ठियों से भागकर, निकल चला नवाब की ।

वे पत्थरों पर बैठकर, वने हैं बुत की तरह,

बुला रही है मौज, उन्हे, क्या पता चनाब की ।

किया है मैंने जुल्म, एक देखने का ही उन्हे

वे फेरकर निगाह यू‘‘ पर सितम तमाम की ।

खुशवूयें सजा के मैं, रुह में वसा करु‘‘

हैं यही मंजिल विमल, महकते शवावकी ।

DO NOT COPY

(रचनाकर की शिघ्र प्रकाशित पुस्तक गजल-संग्रह से)

DO NOT COPY

स्थानान्तरण - १

अगर लोग

अपने-अपने धर्म,

अपने-अपने देश ही चाहते हैं

तो ऐसा क्यों करते हो ?

हम

तुम्हारी छाती पर

बोझ बने हुए हैं ?

तो ऐसा क्यों करते हो ?

एक बात याद रखना,

इसके बाद भी,

कुछ लोग बाकी रह जायेंगे,

क्योंकि

कोई धर्म, कोइ देश उनका नहीं होता !

DO NOT COPY

स्थानान्तरण - २

अगर लोग

अपने-अपने धर्म,

अपने-अपने देश ही चाहते हैं

तो ऐसा क्यों करते हो ?

हम

तुम्हारी छाती पर

बोझ बने हुए हैं ?

तो ऐसा क्यों करते हो ?

एक वात याद रखना,

इसके वाद भी,

कुछ लोग बाकी रह जायेंगे,

क्योंकि

कोई धर्म, कोइ देश उनका हीं होता है ।

DO NOT COPY

स्थानान्तरण - ३

हम

अपना धर्म

अपना देश

अलग नहीं चाहते

तो ऐसा क्यों करते हो ?

हम

तुम्हारी छाती पर

बोझ बने हुए हैं ?

तो ऐसा क्यों करते हो ?

एक बात याद रखना

हम

अकेले नहीं जायेंगे,

हम,

अपने सिर की गठरियों को भी लेते

जायेंगे !

हमारे साथ, हमारा

अपना धर्म

अपना देश भी

जायेगा।

DO NOT COPY

निर्माता

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान,
इतिहास वदल देने वाले
कुछ हिम्मतवर लोगों के काम।
वियतनाम और वियतनाम
उत्तर और दक्षिण की
करामात !
जर्मनी और जर्मनी
हिटलर और मुसोलिनी की हवालात,
सबने
कुछ न कुछ वनाये हैं !
हम तो केवल
गम के आ‘‘सू पीकर
ओले, पाले और
धूप, गर्मी को खाये हैं !
देखा है, खोजा है, गिना है मैंने
केवल
लहलहाते खेतों में
अपनी अंगुलियों के पोरों को
और भी कि

DO NOT COPY

हमने उस नंगे फकीर को

अपनी झोपडियों में रहने की

इजाजत दी है !

ऐ आसमान के बादलों

तू आओ

मुझे छुरा भोंको

वम फेंको मुझपर

आन्दोलन करो मेरे खिलाफ

क्योंकि

तुम्हे भी कुछ न कुछ बनाना होगा !

आक्रमण और विश्राम

उनकी गोलियों की बौछार से,

छलनी होकर मैं

हाजिर हू“,

तेरे दरबार में,

मा“ !

मैंने हमेशा उन्ही रास्तों पर

चलने की

कोशिश की है,

DO NOT COPY

जिस रास्ते पर

दाना चुगाते समय

मा“ मुझें चलाया करती थी

कितनी ही सावधानियों के साथ

तेरे दरवार में,

हाजिर होने पर भी

कुछ न कुछ त्रुटिया“

तो रह ही गयी होंगी

मा“,

बादलों के उपर,

जब-जब मैंने

उनके अहंकारों के रंग देखे होंगे,

तेरे स्वाभिमान की वारिस में

भींगने को

मन मचला होंगा !

हो सकता है

मा“

उसी समय

उन पगडंडियों से

थोडी दूर हो गया हू“गा ?

DO NOT COPY

पर मा“,

उन्होने मुझे

जब घर से वेघर कर दिया

मैं मुस्कराता रहा !

पर

लहलहाते पौंधों से जब

उन्होंने मुझे छीन लिया,

जब वे

मेरी अंगुलियों के अभाव में

सुख गये !

तो मा“

मुझसे रहा नही गया !

पलट कर अपना बाया“ हाथ

चलाया था मैंने !

बदले में उन्होंने

मुझे गोलियों से भून दिया !

उनकी गोलियों की बौछार से,

छलनी होकर,

हाजिर हू“,

DO NOT COPY

तेरे दरवार में मा“ !

अब तू,

मेरे अन्दर से

अपना सब कुछ समेंट लो !

और मुझे,

अपने चरणो में विश्राम करने दो !

रंग

मेरे हृदय में आओ,

मेरे विवेक, मष्तिष्क,

कण्ठ, वाणी

कलम में आओ

मा“ !

मुझे निमित्त मात्र बनाओ मा“ !

बादलों के पार से

तू इनमें अपना रंग भरो !

कोर्णाक अजन्ता, खजुराहो,

सभी में तूने

अपना रंग भरा तो था,

पर

DO NOT COPY

वे सभी,

सुखी मानवता की गाथाये हैं ।

आज मैंने

पश्चिम के अकाश पर

बादलों का अत्याचार देखा है ।

प्रतिवाद के रुप में

मैंने पूरव की ओर

वादलों का

ज्वाला सुखी पहाड देखा है ।

मा‘‘,

तुझे अपना रंग

इसी ज्वला मुखी मे

भरना होगा ।

दू‘‘गा मैं

अपने खुन का

बू‘‘द बू‘‘द

कतरा-कतरा

अनन्त आकाश पर

अब इसे फैला दो मा‘‘ !

नहीं तो,

DO NOT COPY

आ जायेया बाहर

उकताकर वह सरी-सृप

जिस पर

यह धरती टिकी हुई है !

मा‘‘,

इस चा‘‘दनीं का

क्या होगा फिर ?

पुरस्कार

तुम मुभ्को

क्या दोगे ?

आसमान गवाह है,

हिरोशिमा और नागासाकी में

परमाणु वोने वाले को

तुमने-दिया है

अपना सबसे बडा

पुरस्कार !

संतरजी आसमानों पर

जब उन्होंने

शंहशाहो का खेल खेला था,

DO NOT COPY

मैंने हाथी, घोडे और उ‘‘ऽटों से नहीं

मेंमने और बकरियों के साथ

नंगे बदन

उनको मात दे दी थी !

वह खेल

जारी है अभी भी,

जाओ

मैं तुमसे वादा करता हू‘‘,

अगर

सम्भाला तूने

मेंरे मेंमने और बकरियों को

तो मैं,

तेरे साथ रहू‘‘गा ।

तुम मुझको क्या

दोगे ?

जानते हो

तुम भी

जानते हैं, हम भी,

“हे राम !”

DO NOT COPY

द्रौपदी की केश राशि

मैं,
इसे अपना देश
समझता हू“,
तुम समझते हो
इसे
अपनी जागीर,
फिर भी
दण्ड तुम नहीं
मैं पाता हू“ ।
महादण्डाधिकारी वन
रात के अन्धेरे में
तुम मेरे सीने में
छुरा भोंकते हो,
जब
सुवह सुरज उगेगा
और देखेगा
तुम्हारे इस प्रजातन्त्र को,
देखेगा
मेरे खून से लथपथ

DO NOT COPY

इस धरती को तो
उतरेगा बदलों के उपर से
एक फन्दा
और तेरे गले को
झटक कर ले जायेगा और
हर रोज
उषा
तेरे खून से
अपना केश स‘‘वारेगी ।

डवल रोटी

बादलों पर
देखा हैं मैंने
अनेक रंग
गोरा,
काला,
गेहुआ
और बहुत से सफेद पोश भी ।
और
सुना ही नहीं देखा भी है
रोज

DO NOT COPY

सुवह और शाम के सूरज को
कहते हुए यह कि
अन्दर सबके
एक ही रंग होता है,
लाल ।
यहीं कहलाता है
कहीं लाल सेना,
यही वनता है
कही लाल पसीना,
ऐ मेरे दोस्त,
इस पसीने की भूख
अब,
तभी शा‘‘त होगी
जब मैं
उस रोटीं को
खाउ‘‘गा
जिसे तुम
अपने फ्रा‘‘स के कारखाने में
बनाया करते थे !

DO NOT COPY

खंजर

चाहता तो हू“,

दुधिया रेत पर

तेरे मन्दिर के आगे ही

मैं

शाम के सूरज को पीउ“ ।

पर

क्यों आज सारा आसमान

धुए“ से भर गया है ?

मा“,

आज सब कुछ खत्म होगया है

क्यों ?

कव बादलों ने

खून के घू“ट पीये थे ?

क्यों आज

उनके वदन से पसीने की जगह

उनकी आ“खों से

अ“गारे फूट रहे हैं ?

जहा“ पंचवटी के लिए भी

DO NOT COPY

जगह नहीं

कैकेयी की कील पर सम्भली

इस धरित्री पर

रावण, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न।

इनमें से,

कौन, कहा‘‘ और कव

मेरे सीने में खंजर उतारेगा ?

चाहता तो हू‘‘

दुधिया रेत पर

तेरे मन्दिर के आगे ही

मैं शाम के सूरज को पीउ‘‘ ।

DO NOT COPY

वसियतनामा

क्या करु“ मा“,

मैं क्या करु“ ?

सारे आसमान पर

हैवानियत का

वसियतनामा लिखा हुआ है ।

मैं इस

पूरे वसियतनामें का,

टुकडा-टुकडा, चिथडा-चिथडा,

चाहता हू“

कर देना, पर !

पर हमीं टुकडों में वंटे वादल बने

भटकते फिरते हैं

तो,

क्या करु“ मा“,

मैं क्या करु“ ?

इन टुकडों पर पलते,

बादलों को

कैसे समभ्फाउ“,

तुम उसी अमृत के स्त्रोत हो

DO NOT COPY

जिस के विना

धरती, आसमान सब

सूख जाते हैं,

फिर तुम उसे,

एरावत पर बैठाकर

लिखने देते हो

यह वसियतनामा

क्यों ?

चुनाव

ऐ मेरे दोस्त,

पूछते हो तो वताता हू“

वस

दो ही काम होंते हैं

यहा“, और

दो ही होंते हैं

अन्जाम उनके,

एक तुम

अपनी महत्वाकक्षां के लिए,

करते हो,

DO NOT COPY

दूसरा

बादलों के पारसे

तेरे सामने आकर खडा हो जाता है ।

पहले से

तेरी महात्वाकांक्षा पूरी होती है

तुम नहीं,

दूसरे से

तेरी महत्वा कांक्षा अधूरी होती है

तुम नहीं,

कोई नहीं,

कुछ नहीं,

ऐ मेरे दोस्त

चूनलो, चाहते हो जो कुछ भी

चुनाव तेरे हाथ में है ।

DO NOT COPY

वह कौन

तू कहता है
सूरज,
पूरव में उगता
पश्चिम में डुव जाता है ।
अरे झूठ,
गगन-मण्डल की वदलिया‘‘
छा‘‘टकर देखो,
वह सदा
उसीपर जलता हुआ
तेरे रग रग,
रेशे-रेशे को
आलोकित कर रहा है ।
तेरी आ‘‘खों का प्रकाश ?
क्या तेरा है ?
तू कहते हो,
मैं ह‘‘सता हू‘‘,
मैं प्रेम करता हू‘‘,
मैं बोलता हू‘‘ ,
मैं चलता हू‘‘,

DO NOT COPY

अरे,

तेरी वास्तविकता तो यही है,

जब भीं केवल तू होता है

तू चलकर

अपनी अर्थी तक भी नहीं पहु‘‘चता।

धधकती ज्वाला के बीच

जलता हुआ

तू क्या सोच रहा है?

तेरे घर के अन्दर की चीख

क्या तेरे लिए है ?

फिर, तेरे घर के सदस्यों में शामिल

वह कौन था ?

DO NOT COPY

नयी सडक

चलता हू‘‘ मैं दोस्त,
यहा‘‘
अपनों के बीच सब पराये हैं ।
वही ठीक है
जहा‘‘ सब पराये ही पराये हैं ।
बहुत दिनों के वाद
तेरे आसमान की ओर देखा है
जहा‘‘
एक नयी सडक का उद्घाटन हुआ है
जो मेरे सीने से होकर
गुजरती है ।
भर गया है
चारों तरफ
धूल और गुब्बार,
मडरा रहे हैं
चारों तरफ
चील और कौवे ।
किनारे पर,
एक दुल्हा

DO NOT COPY

वेखबर चला जा रहा है
जो
लौटकर,
एक नयी सृष्टि का निर्माण करेगा।
जानते हो
फिर क्या होगा ?
इस दुल्हे-दुल्हन की पेट की आग
बुझाने के लिए,
उस भागती हुई कार में
बैंठे मनुष्य ?
की मनुष्यता को बचाने के लिए
शर्मोहया को
तराजू के पलडों पर रखने वालों के लिए
वह सृष्टि,
वगल के मील की चिमनी का
धु‘‘आ वनेगी
फिर ?
ये मडराते हुए चील और कौवे
निकालेंगे
उसकी आ‘‘खे,

दोस्त !

जहा“

बूढे की झुरियों में ही

उसके खेतो के मु“डेर सिमटे होंगे,

जहा“ लाठी टेकती

उसकी उदास आ“खें

अपने खेतों के निशान भी

नहीं ढू“ढ सकेंगी

वहा“ रहकर क्या होगा ?

दोस्त,

चलता हू“ मैं वहा,

जहा“ सब पराये ही पराये हैं।

DO NOT COPY

सोन गंगा

चारों ओर

मैं

तूझे खोज आया

पर

तू कहीं न मिली !

नहीं-नहीं

मैं राह भूल नहीं गया हू“,

वही जगह,

मन्दिर की

वे ही सीढिया“ तो हैं

जिस पर पा“व रख

हम

स्वर्ग पर चढा करते थे !

वहा“ अब

कोई और मिले थे

तूने मुझे पहचाना नहीं ?

क्यों

कौन सी चीज छुट गयी है ?

क्या निशानी

DO NOT COPY

चाहिए तुझे ?

मेरी ओर देखो

मैं वही तो हू“ !

कुछ छोड कर नहीं आया हू“ !

कुछ

दशकों को छोड कर !

हा“, हा“

मैं वह नहीं

जो तेरी ओर से

किसी मींन मुद्रिका की मा“ग करेगा

अरे

मैं तो खुद

तडपता रहा

छटपटाता रहा

मीन की तरह

तुम से दूर होकर !

अरे धीरे रे !

इतना न उमडो मेरे दोस्त,

कहीं

इन आ“सुओं में जमकर

DO NOT COPY

इन जूल्फों की धूप में
फिर से सावन की
काली घटा न घिर आये,
नहीं नहीं
इन घटाओं से अब तू
किसे सहलाओगी
तृषित दोपहरी को तो
मैं वही छोड आया हू“,
तू भी
उस काली घटा को अब
वही रहने दो,
अब तो
शुद्ध निखालिस सोनगंगा
हमारे पास है ।
आओ
हम अपनी इसी पू“जी से
उस मधुर छमछम का स्वागत करें
जो थोडी ही दूर से
हमारे दरवाजे पर
थाप दे रही है!

डाक्टर और कसाई

अंधेरे में
कदम रखते हुए
हमें भय नहीं लगता दोस्त
क्योंकि
हम भय खाते हैं,
तेरीं तरह
किसी का तलवा नहीं
किसी का
घाव सहलाते हैं,
जिसने भी
इस घाव को लगाया
उसके
सिंहासन तक पहु‘‘चने वाले
सैदाई हैं
हम
हा‘‘, हा‘‘
हम डाक्टर के अलावा
रोग, शोक और भोक के
तुम सुक्ष्मजिवी, परजीवी

DO NOT COPY

किटाणुओं के लिए

तुम्हारे विरोध में बने

वगल के

बूचडखाने के

कसाई हैं

हम !

जनाजा

भागता रहा हू“

मैं अभी तक

प्राण-रक्षा में,

उसने तो

कव की

ताथैया कर ली थी

पर मैं भागता रहा हू“

क्योंकि

उसकी जगह तुम आ गये।

वैविलोनिया, मिस्त्र और

यूनान से सिखकर

तूने मुझें

DO NOT COPY

उनके बीच

कैद कर दिया।

तब से

लोग मेरे लिए नहीं

उनके लिए

मेरे पास आते थे।

मैं वदहवास

भागकर

गिशाओं के देश तक

चला गया

पर मत पूछो मेरे दोस्त,

लौटना पडा वहा“ से भी

जिसे

हुएनसांग, मार्कोपोलो, और अलवरुनी ने

वाद में भी देखा था,

खलता रहा मुझे

तेरा वह झुठा स्वप्न

जिस पर मेरा नाम चढाकर

ढलती उभ्र में

धक्के देकर

निकाल देते थे

DO NOT COPY

बाहर उसे ।

आखिर मेरे निमन्त्रण पर

वह दिन भी आया

उसने मुझे

तुम्हारी कैद से

बाहर निकाला

सारा असवाव

मैंने उसके उ‘‘टो और उ‘‘टनियों पर

लदवा दिया !

पर

वह जालिम तो

मुझे हलाक ही करने लगा,

उसके यहा‘‘ तो

खाली घरों मे केवल

भूतहा सन्नाटा होता है !

भागा वहा‘‘ से भी

जान छुडा कर

हा‘‘, हा‘‘ भाई

बाबर, तमूर, च‘‘गेज

सबको बारी बारी से

DO NOT COPY

मैंने बुलाया है,
तेरी कैद से
बाहर आने के लिए
पर
सब ने मुझे धोखा दिया है !
अन्त में जब मैंने
उसे बुलाया
बजाप्ते कानून बनाकर
कील ठोक कर
मेरे हाथ और पैरों में,
लटका दिया हैं उल्टा मुझे
अपने नये प्रक्षेपास्त्रों पर ?
और
लगा दिया हैं
उन परिचारिकाओं को
मेरी खिदमत में
जिसे तूने, उसने, सब ने
लगाया था ।
वस्त्र केवल
बदल गये हैं ।
भागना छोड कर

DO NOT COPY

मैंने अपनी सा‘‘सों के उर्द्धगमन के साथ
स्वीकार कर लिया है
उनकी खिदमत को
वस
बटन दबाने भर की देर है ।
ऐ आसमान के बादलों,
अब तुम
ताला खोलो
या ताला तोडो
या घुमाओ
जहा‘‘ भी मेरे जनाजे को ।

सुअर के बच्चे

कल ज्योंही मैंने
बादलों के उपर पा‘‘व रखा
तेरे होठों की मुस्कुराहट,
आ‘‘खों के तेज,
प्रभा-मण्डल के प्रकाश,
अभय प्रदान करते

DO NOT COPY

उठे हुए

तेरे हाथ,

अभिभूत होकर

सिर टेक ही दिया

चरणों में तेरे

बच्चों की तरह

विलख कर !

आश्चर्य !

कितने सुअर भी

तेरे चरणों में

लोट रहे थे !

थोडी ही देर के बाद

एक आदमी आया,

अपने को

तेरा प्रतिनिधि

बतलाने लगा।

उसके

तमतमाते

निःतेज

प्रभावीहीन चेहरे को

DO NOT COPY

डंडा लिए

उसके हाथ को

देखते ही

भय से छुप जाने को

वे सुअर

खोजने लगे

अपनी मा“ की कोख को

जहा“ से

पकडकर वह कही

उनकी मांस की बोटिया“ बनाकर

खा नहीं जाय !

उन्होंने मुझे बताया

वह उन्हें

सुअर नहीं

सुअर के बच्चे समझता है

मुट्ठिया“ भींचकर

मैं उन्हे कुछ सिखलाने लग गया

अब वे

घोघियाना सीख गये हैं,

कसम खाई है

DO NOT COPY

मैंने

उन्हें

वराह बना देने की ।

DO NOT COPY

सत्यम्

पता नहीं बसन्त
किसी सन्त का है,
महन्त का है
या किसी
शकुन्तला के दुष्यन्त का है
पर
इसमें सन्देह नहीं कि
है यह उसका
जो
राही हमारे कन्त का हैं ।
जो कण-कण और दिगन्त का है ।
उस भोर का भी
जो तुरन्त का है
उस सा‘‘झ का भी
जोस बस अन्त का है।

DO NOT COPY

शिवम्

बसन्त पंचमी को जन्मी
पली वढी
संग सहेली के
खेली
ठिठोली, आ“ख मिचौली
और
प्रेम-आलिंगन की डोरी में
बा“धकर
आज होली के दिन
उसकी डोली, हमजोली को
विरह में छोड
कहा“ चली ?
क्या वह नबोढी
एक वर्ष वाद
अभिसार की कली लेकर
फिर आयेगी
इस ड्योढी पर ?
कहीं ऐसा तो नहीं
हम बीच में ही

DO NOT COPY

कूच कर जायें
और
न आयें चाहकर भी इधर
उस होम से निकल कर
कौन आता है
उस ॐ से मिलकर !

सुन्दरम्

देखते नहीं
दोपहरी में भी
सब चीज हरी हैं ?
वा‘‘स , गुरा‘‘स
पीपल के कोंपल
सेमल के कपास
आम, अमलतास
दिशायें गुलमोहरी हैं ।
चारों ओर
मौज, मस्ती
हर्ष, उल्लास

DO NOT COPY

ढोलक, ढफ और
होरी की
लहरी हैं ।
मन बृन्दावन
तन उपवन
खेतों में हरिहरि
और उसी में
उसका हरि है
जिससे
मिलने जा रही
गुनगुनाती, छुमछुमाती
वह
गा‘‘व की एक परी है।
प्रभु ने उसकी
छाती की थाती और
अंग-प्रत्यंग की मांस-लता को
किस करीने से जरी है !
ठीक उसी तरह
मादक !
मदहोस !

जैसे आम की अमराई
और
फागुनी मिनसहरी है!
होंठ ?
सतरें के फा“क
और आ“ख ?
चकित हिरन की सहचरी है।
चेहरा सुनहरा
कान ?
तरकस खाली है
भैंहें ?
कमान और
कमान पर एक छोटी सी
मंजरी है।
अभी कल ही वह भोली
होली से होली है
जिससे
उसकी चोली ओर सारी सतर“गी
रंगों से भरी हैं।
लहराते आ“चल पर

DO NOT COPY

बलखाते लटों की लरी,
माथे पर गागर
और गागर में प्रीतम प्यासा के लिए
प्यार का सागर धरी है !
कैसी प्रीत
उस सीत सिरफिरी से
जब यहा‘‘
मा‘‘ग सिन्दुरी है ।
वह जो दू .... र
दिखलाई पड रही नहरीं है
बही जायेगी
अपने हरि को
खिलायेगी पिलायेगी
और माथे के पसीने को
आ‘‘चल से पोंछकर
मुस्कान के उफान से
अपने प्रीयतम के भीतर
कर्म का उठान भर
चली आयेगी घर !
ओह प्रभु !

DO NOT COPY

यह कैसी तेरी नगरी है!

न्यारी प्यारी

माया सुनहरी है !

क्या

इसका मुकाबला

कर सकता कोई शहरी है ?

यहा“ :-

अमराई में कोयल और

टीसता पपीहरा है,

मन भावन दियरा

और

दियरा में जियरा है

वहा“ :-

क्लब की कौवाली

देहकी दलाली

और

कुहराम का कुहरा है !

DO NOT COPY

कुलटा

उन्हें

मेरी अतृप्ति का

कोई बोध नहीं !

हम वार वार

अतृप्त आत्मायें लेकर आयेंगे !

पता नहीं,

वे मुझे कितनी वार

चुल्लू भर पानी में डुबायेंगे !

DO NOT COPY

परिचय

ऐ मेरे दोस्त

आज मैंने

एक अजूबा देखा है !

लोग

बादलों पर से

पकड-पकड कर उन्हें

अपने आस्तीन में

रख, रहे थे !

कहा मैंने

यह क्या करते हो ?

अरे

यह भी उसकी

एक कूटनीति है !

आज नहीं कल ....

उन्होंने जबरदस्ती

मेरे आस्तीन में भी

रख दिया और

कहने लगे

ऐसा कहीं होता है

DO NOT COPY

ये हमारे नेता हैं !

ऐ मेरे दोस्त,

इससे अधिक

मुझे कुछ नहीं कहना है

पता है ?

उन्हें मेरे आस्तीन में ही रहना है !

बिन्दिया

प्रियतम् !

आज दुष्यन्त को

उसका नगीना मिल गया।

खो दिया था सदियों से

जिसे मैंने,

सूरज

जब बादलों पर

अपना प्रकाश उडेल रहा था

उसकी अपूर्व छटा से

मोहित होकर

खीचा चला गया

और

DO NOT COPY

पड गया उसके रास्ते में

मैं भी ।

उसी प्रकाश के बीच

वह नगीना

चमक रहा था !

थोडी देर के वाद

सम्पूर्ण सूरज

तेरा बिन्दिया बनकर

मेरे हृदय में

समा गया !

मेरे प्रियतम !

आओ

इसे अब

तेरे क्षीतिज पर चमका दू‘‘ !

ज्योनार

कुछ भी नहीं

हुआ है मुझे

सिर्फ

सुग्गों ने थोडा

DO NOT COPY

कुतर कर खा लिये हैं !

अपने

जबडों में दबाकर

खाइए मुझे !

क्या कहा ?

मन खट्टा हो गया ?

तब तो मेरा परिश्रम

विफल हो गया !

मैंने तो समझा था

आपके

दा‘‘त खट्टे हों जायेंगे

या

हो जायेगी गति आपकी

सा‘‘प-छुछुन्दर की

इसलिए

आपके जबडों में

आया था !

पर .... काश !

फिर भी ....

प्रयास

DO NOT COPY

जारी रहेगा मेरा !

शोले

आज तो
गजब हो गया !
पूरे सूरज को
घडियाल ने खा लिया !
मैं देखता रह गया !
टापता रह गया ।
सूरज तो
हमें बचाता है,
मैं उसे
कैसे बचाऊ‘‘ !
जब वही निगला जा रहा है
तब
मेरी औकात ही क्या है ?
पर
मेरे कलेजे का धु‘‘आ
शोला बन गया है ।
देखो

DO NOT COPY

साफ दिखाई पड रहा है !

शायद

यह उसे नहीं छोडे ।

बुझेगी नहीं तब तक,

जब तक उस घडियाल की

अ‘‘तडिया‘‘ चीरकर

बाहर न निकाल ले

सूरज को,

क्षीतिज पर

उसकी लाली

विखर नहीं जाय

फिर जब तक ।

डूबने नहीं देगा उसे !

घडियाल

अपना मुर्दा मु‘‘हवाये

मिलेगा तूझे ।

संस्कार

आज

गीदड जब

DO NOT COPY

बा‘‘यें से दा‘‘यें

रास्ता काटने लगा

मैं

खुश हो गया !

दोस्तों ने

बहुत कुछ समझाया था !

अचानक वह

पूरा रास्ता काटने से पहले ही

मुड गया,

मैं

मायूस हो गया !

दोस्तों ने मुझे

बहुत कुछ समझाया था

देखा मैंने

सामने एक लकडवघ्घा खडा था,

पता नहीं

वह गीदड

किस के भाग में पडा था !

DO NOT COPY

शीर्षक सम्बोधन

उनके
भूख से बिलबिलाते
बच्चों के खून
तुम्हारे रोशनदान के
आदमखोर
शिशे से छनकर
आते हुए
देखा है मैंने ।
उनकी
मा‘‘, बहन एवं
बीबीयों की आ‘‘खों में
तेरे आदमकद को
मैंने नाप लिया हैं
आदमखोर !
आदमजाद !
बदजात !
बहसी !
जल्लाद !

DO NOT COPY

कुफ्र !

शैतान या ....

क्या क्या नहीं हो तुम !

पर बतलाओ

मैं तूम्हारे लिए

शीर्षक सम्बोधन

क्या रखू“ ?

आगामी कल के लिए

आसमान पर

तू

अकेला बैठा

सब कुछ देखता है,

कल

डूब मत जाना !

मन-मयूर को, नाचने देना

वन-पाखी को थिरकने देना !

कोयल को कूकने देना !

सुग्गों को

तिरने देना, इन हवाओं में।

DO NOT COPY

अपनी किरणों के

जाल फैला कर

बादलों को चमकने देना ।

सामने बैठे पशु को

निर्भिक

जंगल में विचरने देना !

यही मा‘‘ग है

तुम से

आगामी कल के लिए !

या अल्लाह !

या परवर दिगार !

मेरे कटे हुए पंखों को

अपने हाथों से सहलाना !

मैं

ह्वाओं में गोंता लगाते हुए

आउ‘‘ऽगा तेरे पास !

वलय-वर्तुल

ॐ, ॐ ॐ

मंदिर के घंटों से निकल,

बादलों की गडगडाहट में मिल,

आकाश के महाशून्य से टकरा

चा‘‘द की चा‘‘दनी में छिटक।

परिंदों के पंखों में बलखाते

हवाओं की सनसनाहट के साथ।

पुलकित बदन के रोम-रोम में

समाकर,

आ‘‘खों की गंगोत्री की

गंगाजली बन,

तेरे चरणों की धूल

घोलकर,

वर्तुल

पूरा करता है वही।

ॐ, ॐ, ॐ

उर्वशी का नृत्य।

निमन्त्रण की आम्रपाली।

अग्निदाह की दग्ध वासवदता

DO NOT COPY

मंजरी के तीर
कामनाओं के जाल ।
गुलमोहर के रंग
बसन्त का राजा
वर्षा की रानी
सब उसी से निकल
उसी वलय-वर्तुल के
अगल बगल लगे
जलसें तों हैं ।
ॐ, ॐ, ॐ
ध्यान की गहराईयों से निकल
यहीं तो कह जाता है यह !

DO NOT COPY

कीडा

मा“,

व्याकुलता में

मैंने क्या नहीं किया है !

कैसे कहू“

मैं अपनी नीचता को तुम से

पर

कैसे न कहू“

मैं अपनी नीचता को

अगर

मैं ही न कहू“ अपनी नीचता को तो

कौन स्वीकारेगा

अपनी नीचता को ?

इस संसार में आया हू“,

हा“ड मा“स लाया हू“

जीव हत्या

मैंने की है !

अपनी इज्जत को

बेंच दिया है मैंने !

DO NOT COPY

मा“,

मैं खरीदार नहीं हू“,

चोर हू“

शराबी हू“,

आवारा हू“,

चा“दनी को चुराकर

मैंने अपने तहखाने में

बन्द किया है,

ह्वाओं को पिया है मैंने

बोतलों में बन्द कर के !

डैनों को फैला कर आकाश में

आवारागर्दी की है मैंने,

मा“

लौटकर गिरवी रखे घर के भीतर

मैंने वह सब कुछ किया है

जिससे लोग

मुझे

गन्दी नाली का कीडा कहते है ।

बोल मा“

तुम क्या कहती हो ?

DO NOT COPY

अपने सड गये फलों की
सडा“ध
मैं रोज
तेरे चरणों में चढा आता हू“ !

DO NOT COPY

शीश महल

तेरे सीने पर

पा‘‘व रखकर

मा‘‘ ने

मुझे अपना स्तन पकडाया है !

सदियों से

उसने तूझे

सोने के कटोरे के साथ

बुलाया है !

पर

तू कभी नहीं आया है!

लोगों ने

मुझे उसी तरह

मा‘‘ का स्तन पकडे

कोर्णाक और खजुराहो में सजाया है

जैसे हम किसी

अजायब घर के जीव हैं

मैंने

उसकी गोद में

पा‘‘व ही नहीं पटका है बल्कि

DO NOT COPY

उसने

मेरे मल-मूत्र को भी

उसी तरह छुआ है

जैसे तुम किसी

पूजा की सामग्री छुते हो !

किसी तिलचट्टे को

उसने घुसने नहीं दिया

वडा कहलाने वाले शीश-महल

तूने

मुझे

हमेशा अपनी ना‘‘क की सीमाओं से

दूर रखा है,

अब कोर्णाक और खजुराहों में नहीं

खेतों और खलिहानों में,

उसके नंगे बदन के

सूखे स्तनों ने मुझे

बताया है,

वही सब कुछ है

तुम एक छलावा हो

एक झुठा, एक कपट, एक आडम्बर

हो तुम

DO NOT COPY

अब यह साबित हो चुका है !

DO NOT COPY

उपासना

आज

सब कुछ ठहरा हुआ है !

मा“

यह तूफान आने से

पहले की शान्ति नहीं,

तेरी गलियों में बिचरने की

परम क्रान्ति है ।

अमराई से छनकर आती

तेरी किरणों को

मैं साफ देख रहा हू“ !

ललकता हू“

आने को तेरे पास

इन किरणों पर सवार होकर

पर

कहता है कोई

मैं इन्हें ढोकर

चारों ओर पहु“चा दू“ ।

सामने कुत्ते

भौंकते हैं, रोकते हैं,

DO NOT COPY

रास्ता तो मैं
काट लू‘‘गा,
इन किरणों को
प्रत्यंचा पर चढाकर
पहू‘‘चा दू‘‘गा वहा भी,
पर
देखना मा‘‘,
सम्भालना मुझे,
कुत्ते के साथ
आने वाले लोग
मेरा अंगूठा मागेंगे,
यहा‘‘ सभी
तेरी स्थूल उपासना के
वाधक हैं ।
इसलिए मा‘‘,
परम शान्ति की इस वेला में
मैं तूझे
केवल अपने हृदय में
जगह दू‘‘गा,
जहा‘‘ से तुम अगोचर होकर

मेरे आ‘‘सुओं में बह सको !

DO NOT COPY

बिद्रोही

क्या देख रहे हो
मुझे, कि मैं
सहीं सलामत तो हू‘‘ ?
पर कवतक ?
सब की आ‘‘खों की चिनगारिया‘‘
क्या मुझे छोडेंगी ?
यहा‘‘ पर मैंने
केवल शाप देने वाले
महर्षियों को देखा है ।
मैं महात्माकांक्षी नहीं हू‘‘
बिद्रोही हू‘‘ ।
मैं झूठा नहीं हू‘‘,
मैं मक्कार नहीं हू‘‘,
पर मैंने झुठ बोला है,
मक्कारी की है मैंने,
महात्वाकांक्षा के लिए नहीं
विद्रोह के लिए,
मैं रहू‘‘, न रहू‘‘ पर
बिद्रोह रहेगा मेरा,

DO NOT COPY

क्या देख रहे हो ?

मैं सही सलाम तो हू“ ?

पर कब तक ?

या तो वे

मेरे कानों में शीशा उडेल देंगे

कवच ले लेंगे,

या ब्रह्मास्त्र छीन लेंगें

या नहीं तो

जिसके

एक एक लोथडे को

हमने अपनी मा“ बना रखा है

वहीं

मेरी कब्र खोद डालेगी

क्योंकि यह भी

इन महर्षियों की ही अनुगामीनी है !

DO NOT COPY

शव-साधना

शहर काटकर
मैं एक सन्नाटा बनाउ“गा,
मन्त्रबन्ध के चारों ओर
जहा“
चेर्नोवल, हिरोशिमा और
नाकासाकी के भूत मडरायेंगे
वासिगटन के कुत्ते
पेरिस के गीदड
लन्दन की डाकनिया“,
बोलेगी जहा“,
लेवनान और श्रीलंका के पिशाच
मेरे इशारों पर
पानी भरेंगे जहा“
सुबह का भूला बुद्ध भी
जहा“ शामको घर लौटकर
दीक्षा लेंगें
मेरे अघोर-तन्त्र का,
अपने हिस्से के
उस टुकडे पर बैठ

DO NOT COPY

शहर की लाशों को

खाउ‘‘गा मैं और

करु‘‘गा शव-साधना अपनी,

यही है

हमारा धर्म दोस्तों,

मुझ पर लानत मत भेजों।

नया आयाम

उनकी

खतरनाक चुप्पी,

खौफनाक पींडा को देख कर

दौडा आया हू‘‘ मैं,

सुना है

सूरज पर पत्थर फेकता,

चा‘‘द पर थूकता है तू‘‘,

ऐ मेरे दोस्त

अब मैं आ गया हू‘‘,

उन्हे अपने उपर झेल लू‘‘गा,

तेरे पास लौटने

नहीं दू‘‘गा,

DO NOT COPY

मैंने देख लिया है

तेरी शक्ति को,

तुम

उन अभिभावकों के

कोल्डटर्की या कोकेनकीड्स

नहीं हों, जिसमें

थूकने की भी

नहीं रह गयी है

नहीं रह जायेगी,

शक्ति !

उनकी

खतरनाक चुप्पी,

खौफनाक, पींडा को देखकर

मैं हो गया हू‘‘ खडा

बाजार में,

लुकाठी लेकर,

हमें अपना नहीं

उनका घर जलाना है ।

आओ,

तेरी शक्ति को

DO NOT COPY

एक नाया आयाम दू‘‘गा मैं !

DO NOT COPY

वधाई

वधाई है
दोस्त तूझे वधाई है ।
नये साल की खुशी में,
आसमान के
काले वादलों के बीच
सफेद वनकर
चमकने की खुशी में,
हम
चमकते नहीं
वरसते नहीं, सिर्फ हमारे
गरजने भरकी खुशी में ,
इस सफेदी को पोतकर
तेरे सवसे इमान्दार
कहलाने की खुशी में,
माफिया बादलों का
सरगना वनकर
देश, विदेश, मदेश
गा‘‘व, नगर
जात, विरादरी
प्रजा, प्रजातन्त्र

DO NOT COPY

सबकी छाती पर

मू‘‘ग दल डालने और

दहशत वरसाने की खुशी में,

हा‘‘, हा‘‘, दोस्त

तुम मेरे हो,

हम सब तुम्हारे हैं ।

तुम, हम,

सफेदी, इमान्दारी

दहशत, बेइमानी

सब एक दूसरे के हैं

इस नये साल को

छोड कर !

बधाई है दोस्त

तुझे बधाई है !

DO NOT COPY

नया“ साल हमारा

नहीं आया अभी,

वह नया साल हमारा,

सदियों से

जिसे तूने

नंगा किया है

जब वह

खडी होंगी

मेरे सामने

लोग जब तक उनको

उनकीं कब्र से बाहर

निकाल सकेंगे,

सो जाउ“गा

मैं

पैरों के नीचे उसके,

कहो

क्या

तब शान्त नहीं होगी ?

मेरे सीने पर

पा“व रखकर

DO NOT COPY

नर-मुण्डों की माला लटकाये
वह नंगी मा“,
सदियों से जिसे
तू ने नंगा किया है
हा“, हा“, होगी
और वही होगा
नया साल हमारा !

उप-संहार गीत

ले सृजन की तूलिका, मैं गीत तेरे गा सकू“, ।
ना वन्द हो सैलाव, फिर फिर लौट के मैं आ सकू“ ।
चल रहा हू“ मैं अभी, पर चल न देना तुम कहीं ।
वन्द होते पृष्ठ हैं पर वन्द होते मन नहीं ।
तन, वदन, मन, आत्मा में आ वसो ।
कलुष को निष्कलुष करती, हो वही ममतामयी ।
हू“ धरा पर राह वन, मैं आश में बैठा हुआ ।
भस्म उनके अंग के जो, मैं तुझे वतला सकू“ ।
ना वन्द हो सैलाव ....
थिरक उद्गम से सफर, करना हमारी राह में ।
सुख-दुःख विरह संयोग में, रहना हमारी त्याग में ।

DO NOT COPY

जी सके वे, जी सकू“ मैं जी सके सब ।

जब तू मिलेगी, जा उन्हें प्रयाग में ।

होकर अदृश्य तू बहा“, आ छन्द में वहा“ करो ।

कुम्भ, काशी में न खुद को, मैं यही नहला सकू“ ।

ना वन्द हो सैलाव ....

तू उमड कर आ, रबिस की ताप में ज्यों बादलें ।

ज्यों शिशु की दाह में, मा“ की पयोधर वह चलें ।

कौन मुर्दा कर सके, अमृत तुम्हारी जब पडे ।

कर चले विनती, यही मा“ चले अब हम चलें ।

फिर जों लौटू“ , साथ में ले वादलें ।

तेरे चरण में, निमित्त वन बरसा सकू“ ।

ना वन्द हो सैलाव ....

गा सकू“ मैं, गा सकू“ मा“ मैं हमेशा गा सकू“ ।

साथ यह आकाश लेकर चल सकू“ ।

जगमगाते दीप की वाती वना

सामने तेरे मैं तिल-तिल जल सकू“ ।

फिर न सिकवा मैं करु“गा, मा“ मेरी

मोर पंखों को जो मैं, तेरे लिए फैला सकू“ !

ना बन्द हो ....

DO NOT COPY

प्रिति

है यह किस दुनिया‘‘ का नाता,
किस दुनिया‘‘ की मुग्ध चेतना ।
ठिठकी सी रह जाती जिसमें
दूषण, शोषण, भोग, यातना ।

इतनी गहरी अनूभूति को
कौन भेजता है,अन्तस्तल में ?
नयनों में आ‘‘सू छलकाता
होती सिहरन सी पल पल में ।

रीती रीती सी लगती है,
कितने जन्मों की गगरी है ।
कहा‘‘ भरेगी कौन जानता,
जन्म जन्म की प्यास भरी है ।

भटक - भटक कर कु‘‘जों में
या फिर पग में पायल ब‘‘धवाकर
दूर दूर तक किसे निहारु ?
किसको खोजू‘‘ सेज सजाकर ?

DO NOT COPY

चुनर होता, तार - तार पर
बार वार उसकी अनुभूति
मिलन यात्रा आ‘‘सू फिर भी
समभ्क न पाउ‘‘ प्रेम विभूति ।

टाट फूस के पिछवाडे से
दूर-दूर तक पन्थ निहारे ।
वन प्रतिक्षा खडी निगोंडी
मग में पलक पा‘‘वडे सारे ।

हर आहट पर चौंक बा‘‘वरी
फीकी सी मुस्कान उभरती ।
सूनी अखियों का गंगा - जल
पलकों से गिर धोये धरती ।

यौवन के इस विरह-मिलन में,
रिसता-रिसता सा तनमन में ?
भरता है ला कौन कहा‘‘ से
कैसे रहता युग-चेतन में ?

खजुराहो की कथा - यात्रा

उनके रीते आलिगन में
आता है फिर कोमल किसलय
किलकारी बनकर आ‘‘गन में

सागर का प्रया‘‘ण परन्तु

छोड उसे पद-चिन्ह निशानी

चलता चक्र सदा रहता है,

वही वालपन, जरा, जवानी ।

DO NOT COPY

“ धनेसर सबकुछ चुप चाप देख रहे थे ! देख रहे थे, वे अपने अतीत और वर्तमान को ! कुछ नहीं होगा, कहकर वे चले गये और घर प‘‘हुचकर कफन बा‘‘धकर सो गये । इसके अलावा वे क्या कर सकते थे ? उनका बस चले तो वे अभी सारे संसार में आग लगा दें ! लेकिन लोग कहते हैं कि जुलुम करना और जुलुम सहना दोनों अपराध है । लेकिन हम इस जुलुम का प्रतिकार कैसे करें ? इसको सह जानेके अलावा कौन सा उपाय है ? .... उसी उधेडवून में रात हो गयी । वे ममता के मारे अपने पुत्र के पास आये ! वे नहीं चाहते थे कि उनका पुत्र यह सब करे :

“हमारे बाल बच्चे भूख से मर जायेंगे, इस खेत को मत लीजीये, इसे हमारे बाल बच्चों के लिए छोंड दीजिए । जब वे नहीं माने तों मैं भी अड गया । तीन चार जिल्ला जवार के अच्छे आदमियों से कहलवाया । महन जी से कहलवाया तो वे खून का घू‘‘ट पीकर रह गये । .... दुसरे ही साल भूमि सुधार और करजा सम्बन्धी कानून लागू हो गया ! कोई अपना कर्जा नहीं देगा, कोई अपना मा‘‘गेगा नहीं ? व्याज मनमानी नहीं लेगा । कितने लोगों का करजा डुव गया । हम भी चुप्पी साध गये । वे भी मांगना छोड दिए । ऐसा सतवन्ती बनने लगे कि लोगों से कहते :- अरे सब कोई खाकर पचा लिया तो नहीं धनसेर से हम क्या मा‘‘गेंगे ? अपना ही खून है! सुन

कर हम खून के धू‘‘ट पीकर रह जाते थे ! जब बच्चे हमारे सा‘‘वा का भात खाकर सोते थे तो उनके अपने खून नहीं थे, जब हमारे सारे खेतों को मनमाना लिखा लिया तब वे अपने खून नहीं थे, कानून बनते ही अपने खून हो गये ? जी में आया कि मैं भी उनको जवाव दू‘‘, परन्तु मैं उनको जानता था ! वे तो सिरिफ हमारी वात सुनना चाहते थे कि हमारा मन कानून बनने के वाद कैसा है । पर बबुआ हमारा मन क्या होगा‘‘ ? हम तो मर चुके हैं । अपने आपको मार दिया है मैंने तुम लोगों के लिए । महन जी के कहने पर पढाना शुरु किया सो अभी तक तुम लोगों को पढा रहा हू‘‘ ।

मैं उनके यहा‘‘ गया और एक धोती पहना कर माफी मा‘‘ग लिया स्वारथ काका, सात जन्मों में भी मैं आपका करजा नहीं चुका सकता, सारे खेत बेंचकर भी क्या चुका सकता हू‘‘ ? हमारे बच्चे भी तो आपके ही खून हैं, हमको अब उबरिन कर दीजिए । और स्वारथ काका ने हमको उबरिन कर दिया ।कहते हैं-दुनिया‘‘ में इन्सान है तो धनेसरे है । परन्तु मैं जानता हू‘‘ कि इस इन्सानियत की क्या-क्या दुर्गति हुई है ? बस

बेटा सिरिफ तुम लोगों के लिए । मैं कहता हू‘‘ कि तुम यह सब छोड दो । कोई भी तुम्हारा नहीं होगा । हमारा बहुत दिनों का अनुभव है ।

DO NOT COPY

आज वही खेत सरकार ले रही है। जब तुम्हारा खून ही तुम्हारे खून को चूसता है तब दूसरा तुम्हारा साथ देगा क्या ? मैं कहता हू“ कि तुम जाओ और अपनी पढाई करो”

पिता के इस दुःखान्त और स्नेहशिक्त भाषण से नरेन्द्र का मन विगलित हो गया। इसके रेशे-रेशे की सच्चाई को वह झूठला नहीं सकता था ? अपनी छलछलाती आ“खों से उसने उस देवता को देखा ....”

.... हा“, हा“ मैं आपका दुश्मन ही तो हो गया हू“। काठमाण्डू हिमालय पर है। हिमालय पर क्या स्वर्गारोहण करने जाइऐगा ?

तो लिजीए यह स्वर्ग की पुर्जी। आप जिसके लिए मर मिट रहे हैं उतना आपके लिए कोई मर मिटता है ? अरे भोले तुमको बाल बच्चा नहीं है। तुम्हारे मर जाने पर वह औरत दुसरी शादी भी तो कर सकती है ?

राम भरोसे पुर्जी थामते हुए थहरा कर बैठ गया। एक बार उसे लगा जैसे किसी ने उसे भरपूर तमाचा जड दिया हो। वह आ“सू पोंछते हुए सिसकने लगा तो क्या जिसके लिए वह सब कुछ कर रहा है, वह दुसरी शादी करेगी ? कर तो सकती है, कोई बाल बच्चा नहीं है, नवयुवती है। इस सच्चाई से वह इनकार नहीं कर सकता था। दश वर्षो से वह जिस आशा पर जिये जा रहा था वह आशा उसकी बेलौर

DO NOT COPY

में टूट गयी जब डाक्टर ने कहा था, जब उसे पता चला था कि वह अधिक दिनों तक नहीं जी सकता। परन्तु आज डाक्टर ने उसकी रही सही आशा को भी तोड दिया। स्नेह में ही डाक्टर उसके साथ बहुत वडा अन्याय कर गया था। ऐसा अन्याय जिसको वह सह सकने में असमर्थ था। वह भरभराई हुई आवाज में बोला -

“डाक्टर, अब मैं जी ही कहा“ रहा हू“ ? अगर मैं उसके रास्ते से हटकर उसको ऐसा करने में भी सहयोग करु“ तो ठीक ही होगा। अल्हड नवयुवती से गवना किया, विवाह का नेम पुराता रहा, एक वच्चा भी नही दे सका मैं उसको। जवानी की अल्हडता क्या होती है, मैंने नहीं जाना । न मैंने जाना और न उसे अपनी बीबी को ही बा“ट सका। अगर वह ऐसा भी कर लेगी तो मुझे धरम ही होगा। अभी जी कर ही मैं उसके साथ अन्याय कर रहा हू“, पाप कर रहा हू“ ।”

डाक्टर को लगा जैसे कलेजा बाहर हो जायेगा। क्यों उसने ऐसी बात कही? । ऐसा महामानव उसने कहीं नहीं देखा था। जब से उसने होश सम्भाला, बडे बडे लोगों के सम्पर्क में रहा परन्तु बे सब, इस एक अदना, अनपढ, गवा“र आदमी के सामने विलकुल तुच्छ थे, चरण-धूलि में भी नहीं ! ....”

“ .... डाक्टर साहव चलिए भैया टूट चुके ! बोतल का खून तो नहीं खतम हुआ स‘‘सरी खतम हो गयी ।”

डाक्टर धीरे धीरे अंधेरे में कदम बढाते हुए अस्पताल में गया । उसको कोई घवडाहट नहीं थी ! वहा‘‘ पहु‘‘चकर उसने उसका पल्स देखा, छाती में स्टेथो लगाया । कहीं भी जीवन नहीं था । फिर टर्च लेकर पुपिल्स के कोने में जलाया जैसे कहीं जीवन इसी कोने में छिपा हुआ हो । परन्तु जीवन और मृत्यु के संघर्ष में जीवन स्वहा हो चुका था । कहीं भी उसका नामोनिशान बा‘‘की नहीं था । बच्चे जैसे खिलौना नहीं मिलने पर रो पडते हैं, उसी तरह डाक्टर फफक फफकर रो पडा । वह अपने आपको रोक नहीं सका । उसको जीवन कहीं भी नहीं मिला था । उसने एक वार अपने दोनों हाथों से उसके पैरों को छूकर माथे से लगाया और अस्पताल की सफेद चादर से उस निःस्पन्द चादर को ढक दिया ।

राम भरोसे टूट चुका था .... डाक्टर आ‘‘सू पोंछते हुए सीढिया‘‘ उतरने लगा । राम भरोसे जा चुका था - स्वर्गारोहण में, डाक्टर नीचे उतर रहा था-मर्त्य में ! ...... राम भरोसे तुम तो अपनी बजन के बराबर लाठी लेकर मुझे गा‘‘व के बाहर तक पहु‘‘चाने गया था, मैं

क्या लेकर तुम्हे कहा“ तक पहू“चाने जाउ“ॅ, कुछ भी तो नहीं मालूम ?

कुछ देर के वाद एक चिता धू“ धू“ कर जल रही थी । डाक्टर उसे अपने कंधों पर वहा“ पहू“चा आया था ! लपटें उपर आकाश की ओर बढ रही थीं । स्वर्गारोहण हो रहा था ! ....”

लेखक के द्वारा तत्कालिन सभी समस्यायों के वेलाग एवं वेवाक उदघाटन के साथ नेपाल के तराई प्रदेश के ग्रामीण अंचल के एक युवक की मार्मिक अन्तर-कथा को उकेरता हुआ सशक्त उपन्यास

“स्वर्गारोहण”

से

जो शीघ्र आपके हा“थों में आ रहा है

Copyright @ 2022 by Dr Shiva Shanker Yadava

DO NOT COPY

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or used in any manner without permission of the copyright owner except for the use of quotations in a book review.

DO NOT COPY